

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : S-55 E
Unique Paper Code : 121302406
Name of the Paper : Daśarūpaka & Survey of Sanskrit Poetics
दशरूपक एवं संस्कृत काव्यशास्त्र का सर्वेक्षण
Name of the Course : MA Sanskrit Examination, May 2023
Semester : IV
Duration : 3 Hours Maximum Marks : 70

Instructions for Candidates

इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमाङ्क लिखिए।
(Write Your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

टिप्पणी: अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्नपत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में दीजिए।

Note: Unless otherwise required in a question, answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Attempt all questions.

1. अधोलिखित की व्याख्या कीजिए। 7x4 = 28

Explain the following:

i. अवस्थानुकृतिर्नाट्यं रूपं दृश्यतयोच्यते।
रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम्॥

अथवा/or

प्रस्तुतागन्तुभावस्य वस्तुनोऽन्योक्तिसूचकम्।
पताकास्थानकं तुल्यसंविधानविशेषणम्॥

ii. लुब्धो धीरोद्धतः स्तब्धः पापकृद्वासनी रिपुः।

अथवा/or

P.T.O.

वैदग्ध्यक्रीडितं नर्म प्रियोपच्छन्दनात्मकम्।
हास्येनैव सशृङ्गारभयेन विहितं त्रिधा॥

- iii. पृथग्भावा भवन्त्यन्येऽनुभावत्वेऽपि सात्त्विकाः।
सत्त्वादेव समुत्पत्तेस्तच्च तद्भावभावनम्॥

अथवा/or

शमप्रकर्षोऽनिर्वाच्यो मुदितादेस्तदात्मता।

- iv उन्मुखीकरणं तत्र प्रशंसातः प्ररोचना।

अथवा/or

एषोऽयमित्युपक्षेपात्सूत्रधारप्रयोगतः।
पात्रप्रवेशो यत्रैष प्रयोगातिशयो मतः॥

2. आचार्य धनञ्जय के अनुसार अर्थोपक्षेपक के स्वरूप एवं उसके प्रकारों को स्पष्ट करते हुए नाट्य में उनकी उपयोगिता को सोदाहरण समझाइए।

Describe the concept and types of अर्थोपक्षेपक and explain their importance in drama according to Acharya Dhananjaya. 10

अथवा/or

दशरूपक के अनुसार व्यभिचारिभाव की परिभाषा देते हुए किन्हीं पाँच भेदों का विवेचन कीजिए।
Define the व्यभिचारिभाव and explain any five types with examples according to *Dasharupaka*.

3. संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा में गुण-रीति सिद्धान्त के विकास की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए। 10
Give an outline of the development of गुण-रीति सिद्धान्त in the tradition of Sanskrit Poetics.

अथवा/or

संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा में वक्रोक्ति सिद्धान्त के विकास की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए।
Give an outline of the development of वक्रोक्ति सिद्धान्त in the tradition of Sanskrit Poetics.

4. अधोलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिए, जिनमें से एक संस्कृत में हो - 5+5+5+7=22
Write notes on any four of the following in which one should be in Sanskrit:

नाट्यधर्म

अर्थवृत्ति

शृङ्गार रस

अलङ्कार सिद्धान्त के समर्थक आचार्य

भोजराज

राजशेखर

दण्डी

रामचन्द्र-गुणचन्द्र

Theatrics

Arthavṛtti

Śṛṅgāra Rasa

Supporter Acharya of Alankara Siddhanta

Bhojraja

Rajasekhara

Dandi

Ramchandra – Gunchandra